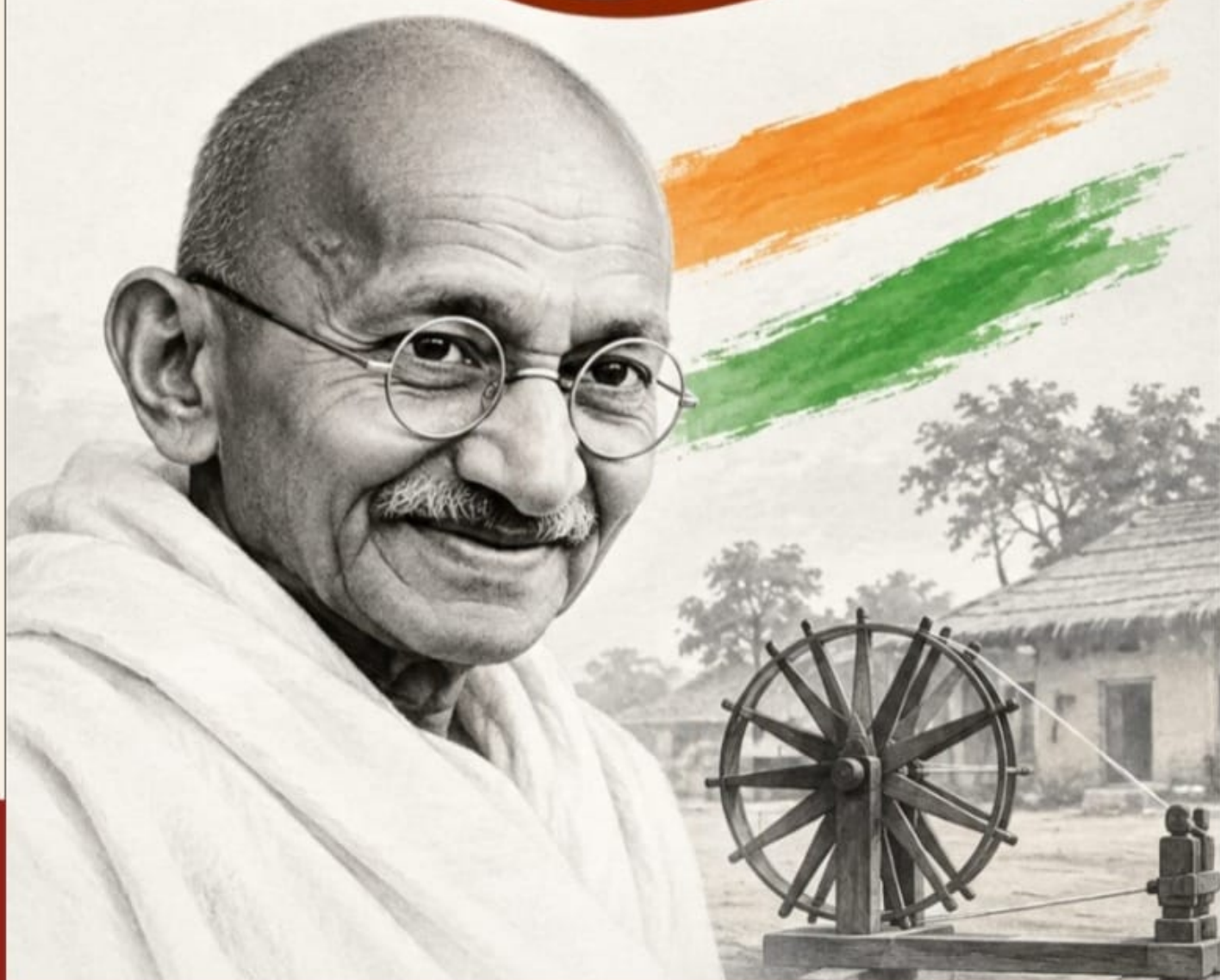


बापू की कहानियाँ



जहूर बख्श

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान

बापू की कहानियाँ

बापू की कहानियाँ

लेखक

ज़हूर बख़्श

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान



विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : सौ रुपए मात्र

पुस्तक	:	बापू की कहानियाँ
लेखक	:	ज़हूर बख़्श
सम्पादक	:	डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
प्रकाशक	:	विकास प्रकाशन 311 सी., विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027
संस्करण	:	2026
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	100/-
ISBN	:	978-93-47390-56-2

दो शब्द

महात्मा गांधी भारतीय इतिहास और सामाजिक चेतना के ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनका जीवन केवल स्वतंत्रता-संग्राम का इतिहास नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन, सेवा, श्रम, स्वावलंबन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मानवीय मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति भी है। पुस्तक का उद्देश्य गांधीजी के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व के उन पक्षों को बाल-पाठकों तक पहुँचाना है, जो उनके भीतर जिज्ञासा, आत्मचिंतन और जीवन-मूल्यों के प्रति सजगता विकसित कर सकें।

गांधीजी के जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ उनके व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया को समझने का अवसर देती हैं। अपनी भूलों को स्वीकार करना, आत्मपरीक्षण करना, कठिन परिस्थितियों में धैर्य रखना और अपने आचरण को निरंतर परिष्कृत करना उनके जीवन की ऐसी विशेषताएँ हैं, जिनसे बाल-पाठक सहज रूप से प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं। इसलिए इस पुस्तक में गांधीजी को केवल एक ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में नहीं, बल्कि संघर्ष, अनुभव और आत्मानुशासन से निर्मित मानवीय व्यक्तित्व के रूप में देखने की दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया गया है।

इस पुस्तक का उद्देश्य गांधीजी के जीवन को वर्तमान संदर्भ से जोड़ना भी है। समय बदलने के बावजूद सत्य, संवेदना, श्रम, जिम्मेदारी और सह-अस्तित्व जैसे मूल्य अपनी प्रासंगिकता बनाए रखते हैं। पुस्तक में संकलित प्रसंग बच्चों को इन मूल्यों पर विचार करने तथा उन्हें अपने जीवनानुभवों से जोड़ने का अवसर प्रदान करते हैं। यहाँ उद्देश्य किसी विचार को आरोपित करना नहीं, बल्कि कथा के माध्यम से प्रश्न, जिज्ञासा और आत्मचिंतन की संभावनाएँ उत्पन्न करना है।

प्रस्तुत सामग्री बालसाहित्य में गांधी-चेतना, राष्ट्रीय चेतना, नैतिक मूल्यों, चरित्र-निर्माण तथा ऐतिहासिक व्यक्तित्वों की बालोपयोगी प्रस्तुति के अध्ययन के लिए शोधार्थियों और अध्येताओं को उपयोगी आधार प्रदान कर सकती है।

अतः यह पुस्तक केवल गांधीजी से संबंधित प्रेरक कथाओं का संकलन नहीं, बल्कि नई पीढ़ी को उनके जीवन-मूल्यों से परिचित कराने और बालसाहित्य में उनकी उपस्थिति को समझने का एक प्रयास भर है।

यदि इन कथाओं के माध्यम से कोई बाल-पाठक सत्य के प्रति सजग होने, अपनी भूल स्वीकार करने, श्रम का सम्मान करने अथवा दूसरों के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा प्राप्त करता है, तो इस पुस्तक का प्रयास सार्थक सिद्ध होगा।

फीरोज़

निवेदन

हमने इस छोटी-सी पुस्तक में पूज्य बापू की कुछ पवित्र कहानियाँ लिखी हैं और अपनी लेखनी पवित्र की है। इसे लिखते समय हमने इधर-उधर बिखरी हुई जिस सामग्री से लाभ उठाया है, उसमें व्योहार श्रीराजेन्द्र सिंह जी द्वारा संग्रहीत सामग्री की प्रमुखता है। उन्होंने हमें उसका उपयोग करने की अनुमति भी प्रदान की है, एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। आशा है, बच्चों को बापू की ये शिक्षाप्रद कहानियाँ रोचक प्रतीत होंगी।

जहूर बख़्श

अनुक्रम

दो शब्द/5

निवेदन/6

1. जब तक हाथ चलेंगे, तब तक काम करता रहूँगा/9
2. पठान हमारा भाई है/11
3. लो, मैंने दाल और नमक का त्याग कर दिया/13
4. ईश्वर को सबकी चिन्ता रहती है/15
5. मैं अपनी पेन्सिल ढूँढ़ रहा हूँ/17
6. जो साँप मुझे काटे, उसे अभयदान मिलना चाहिए/18
7. उसी दिन से बापू ने अधिक कपड़े पहनना छोड़ दिया/20
8. आपके चरणों के प्रताप से.../22
9. बापू चाँदनी का उपयोग भी कर लेते थे/22
10. मैं दरिद्र भारतवासियों का प्रतिनिधि हूँ/26
11. तिरंगे झण्डे का मान पहले होना चाहिए/28
12. वे किसी भी वेश में हमारे पास चले आएँ/30
13. अब यह मेरे कुटुम्ब का आदमी हो गया है/32
14. हमारा एक-एक क्षण मूल्यवान् है/34
15. बापू रद्दी चीजों का भी उपयोग करते थे/36
16. परन्तु वह तुम्हारे भाग्य में बदा था/38
17. राम-काज कीन्हें बिना, मोहिं कहाँ विश्राम/40
18. इतने उदार थे हमारे बापू/42

19. मैं इस चित्र का बोझ कहाँ-कहाँ लिए फिरूँगा/44
20. ईश्वर सदा हमारे साथ रहता है/46
21. एक पंथ, दो काज/48
22. अपना काम अपने हाथों से ख़ूब होता है/50
23. बापू सदा तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे/52
24. मैं लगातार गन्दगी दूर हटाऊँगा/54
25. मैं सब धर्मों का आदर करता हूँ /56

जब तक हाथ चलेंगे, तब तक काम करता रहूँगा

उन दिनों बापू दक्षिण अफ्रीका में थे। वहाँ की अँग्रेज़-सरकार एक ऐसा क़ानून बना रही थी, जिससे वहाँ निवास करने वाले भारतीय-जनों को तरह-तरह के कष्ट उठाने पड़ते। बापू ने उसके इस क़ानून का विरोध किया। परन्तु सरकार तो अपने अभिमान में चूर थी, भला वह बापू के विरोध की चिन्ता क्यों करती? अन्त में और कोई उपाय न देखकर बापू ने सत्याग्रह का डंका बजा दिया। अब क्या था, सरकार भड़क उठी। उसने सन् 1908 ईस्वी में बापू को पकड़ लिया और छह वर्ष के लिये जेल में डाल दिया। उनके साथ सैकड़ों भारतीयों ने सत्याग्रह में भाग लिया था। बस वे भी जेल में पहुँचा दिए गए।

बापू जेल की जिस कोठरी में बन्द किए गए, उसमें पहले से ही शराबी, जुआरी, चोर, डाकू आदि भरे हुए थे। वे आपस में गालियाँ बकते थे, लड़ते-झगड़ते थे और न जाने कैसे-कैसे ऊधम मचाते थे। बापू उनके बीच किसी तरह मन मारे बैठे रहे—बेचारे रात-भर एक मिनट के लिए भी न सो सके। वे अपने जीवन-भर वह रात नहीं भूले—जब जी में आता, लोगों को उसकी कहानी सुनाने लगते थे।

बापू को बड़ी कड़ी सज़ा दी गई थी—सबेरे से शाम तक लगातार गिट्टी फोड़नी पड़ती थी। परन्तु बापू तो अपने मन के राजा थे—वे बराबर हाथ चलाते और गिट्टी फोड़ते रहते थे। एक दिन गिट्टी फोड़ते-फोड़ते उनकी उँगलियों से खून बहने लगा। यह देखकर अन्य सत्याग्रही भाई बेचैन हो उठे और बोले—“बस करो—बस करो बापू! उँगलियों से खून बह रहा है। एक ओर फेंको यह हथौड़ा और पत्थर!”

बापू ने पत्थर पर हथौड़े की चोट लगाते हुए उत्तर दिया—“नहीं भाई, मैं काम करने के लिए उत्पन्न हुआ हूँ। इसलिए काम से कभी मुँह न मोड़ूँगा जब तक हाथ चलते रहेंगे, तब तक काम करता रहूँगा।”

जेल में रहते समय एक बार बापू कचहरी में गवाही देने गए। कचहरी में कुछ